Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ केदार गौरी व्रत कथा ॥

॥ जय केदारेश्वर गौरी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ भृंगी ऋषि और शक्ति ॥

यह केदार गौरी से जुड़ी भृंगी ऋषि की प्रचलित कथा का स्वतंत्र हिंदी रूपांतरण है। अर्धनारीश्वर की अन्य कथाएँ भी प्रचलित हैं।

भृंगी ऋषि भगवान शिव के बड़े भक्त थे। वे पूजा में शिव का ही ध्यान करते और उनके साथ विराजमान शक्ति की उपेक्षा करते थे। शिव और शक्ति के अभिन्न संबंध को वे समझ नहीं पा रहे थे।

कथा के अनुसार गौरी ने उन्हें अनुभव कराया कि जीवन में शक्ति का योगदान भी है। जब देवी ने उनकी देह से अपनी शक्ति वापस ली तो वे दुर्बल हो गए। शिव ने उन्हें सहारा दिया और समझाया कि चेतना तथा शक्ति दोनों का सम्मान आवश्यक है।

माता गौरी ने शिव के साथ अपनी एकता को प्रकट करने की इच्छा से केदार व्रत का संकल्प लिया। उन्होंने श्रद्धा और संयम से शिव का स्मरण किया। शिव उनकी साधना से प्रसन्न हुए।

भगवान शिव ने गौरी को अपने बाएँ अंग में स्थान दिया। इस संयुक्त रूप को अर्धनारीश्वर कहा जाता है। उसी स्मृति में शिव और गौरी का साथ पूजन करने वाला व्रत केदार गौरी कहलाता है।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अर्धनारीश्वर रूप का संदेश ॥

पूजा का भाव

कथा में भृंगी की भूल किसी एक पक्ष को पूरा मान लेने की थी। अर्धनारीश्वर रूप शिव और शक्ति के सहअस्तित्व, परस्पर सम्मान और संतुलन का प्रतीक है। केदार गौरी व्रत इसी भाव से संयुक्त आराधना का अवसर देता है।

एक अन्य कथारूप

अर्धनारीश्वर के प्रकट होने की दूसरी कथा में ब्रह्मा की सृष्टि के विस्तार की प्रार्थना पर शिव अपने अंग से शक्ति को प्रकट करते हैं। यह कथा और भृंगी का प्रसंग अलग-अलग धार्मिक आख्यान हैं; अपनी परिवार परंपरा का पाठ करें।

दक्षिण भारत के कई घरों में दीपावली अमावस्या के दिन इस व्रत का विशेष पूजन होता है। कहीं इक्कीस दिन तक नियमित संकल्प रखा जाता है, जबकि अनेक परिवार मुख्य दिन ही पूजा करते हैं।

कथा का चमत्कार आस्था की भाषा है। पूजा से स्वास्थ्य, विवाह या किसी सांसारिक परिणाम की निश्चित गारंटी नहीं मानी जानी चाहिए।

॥ ॐ अर्धनारीश्वराय नमः ॥

HarGharPanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"